रात्रि क्लास 5/10/65 :– इस ज्ञान में बड़ी शुरुड़ बुद्धि चाहिए; क्योंकि आत्मा को जगाना होता है तो आत्मा शुरुड़ बनती है। कई–2 तो बहुत अच्छी शुरुड़ बुद्धि हो जाती हैं। माताएँ–कन्याएँ अच्छी खड़ी हो जाती हैं। नहीं तो माताएँ बैठ पति को समझावे, इसमें हिम्मत चाहिए ना और निर्भयता भी चाहिए समझाने की। बाकी सब नर्कवासी हैं, दुर्गति में हैं। यह भी तुम जानते हो। जो सतसंगों में जाते वे थोड़े ही जानते हैं कि हम दुर्गति में हैं। वह तो भक्ति में खूब नाचते, ताली बजाते हैं। दुर्गति में जाने लिए तो बहुत गाजा–बाजा बजाते और सद्गति में जाने लिए बिल्कुल चुप। नारद की तरह यहाँ ताली आदि न बजाना है। नारद का मिसाल है ना। तो वह सिर्फ दृष्टान्त देते हैं कि नारद (ने) कहा, मैं लक्ष्मी को वर सकता हूँ? वास्तव में लक्ष्मी–ना० को वरने लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। भक्त तो वर ना सके। लक्ष्मी–ना० को कैसे राज्य मिला, कब मिला, वे कहाँ गए, यह तुम जानते हो, इसलिए तुम मंदिर में जाते हो तो माथा नहीं टेकते हो। समझते हो कि हम ही ल०ना० बन रहे हैं। माथा (घिसना) तुम्हारा बन्द हो गया है। वे कहते हैं यह नास्तिक हैं जो माथा नहीं टेकते। वास्तव में तुम ही आस्तिक हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। वे तो नास्तिक हैं जो परमात्मा को नहीं जानते। तुम अभी धनी के बने हो फिर भी माया थप्पड़ लगा देती है तो ऑर्फन निधनके बन पड़ते हो। भले ही बूढ़े–2 हैं; परन्तु माया उनको भी माया जवान बना देती है। माया के तूफान आते हैं। श्रीमत पर चलना है, हाथ पकड़कर। इस नई यात्रा पर बाप की श्रीमत पर चलना है। सारा मदार है बुद्धि की यात्रा पर ...। अचल, अडोल हनुमान की तरह बनना। अंत में वो अवस्था आनी है। अच्छा, यादप्यार और गुडनाइट।